P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-6* ISSUE-3* June- 2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

सिद्धान्तों और क्रांन्तियों के जनक – डॉ0 लोहिया

Father of Theories and Revolutions - Dr. Lohia

Paper Submission: 05/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 22/06/2021

दयाशंकर सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर,
समजाशास्त्र विभाग,
सकलडीहा पी.जी.कालेज,
सकलडीहा, चन्दौली,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

देश में न्यूनतम एवं अधिकतम आमदनी या खर्च 1 से 10 की सीमा में होना चाहिए।''

स्त्री और पुरुष के बीच असमानता, त्वचा के रंग के आधार पर असमानता, जाति आधारित असमानता, कुछ देशों द्वारा दूसरे देशों पर औपनिवेशिक शासन, आर्थिक असमानता। इन पाँच असमानताओं के खिलाफ उनके संघर्ष ने पाँच क्रांतियों का गठन किया। इस सूची में उनके द्वारा दो और क्रांतियों को जोड़ा गयाः नागरिक स्वतंत्रता के लिये क्रांति (निजी जीवन पर अन्यायपूर्ण अतिक्रमण के खिलाफ)। सत्याग्रह के पक्ष में हथियारों का त्याग कर अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने के लिये क्रांति। ये सात क्रांतियाँ या सप्त क्रांति लोहिया के लिये समाजवाद का आदर्श थीं।

The minimum and maximum income or expenditure in the country should be in the range of 1 to 10.

Inequality between men and women, inequality on the basis of skin colour, caste based inequality, colonial rule by some countries on other countries, economic inequality. Their struggle against these five inequalities formed five revolutions. Two more revolutions were added by him to this list: Revolution for civil liberties (against unjust encroachment on private life). Revolution to follow the path of non-violence by giving up arms in favor of Satyagraha. These seven revolutions or seven revolutions were the ideal of socialism for Lohia.

मुख्य शब्द : क्रांतिया असमानता सत्याग्रह अहिंसा समाजवाद
Revolutions Inequality Satyagraha Ahimsa Socialism.

प्रस्तावना

डॉ0 राम मनोहर लोहिया अनेक सिद्धान्तों और क्रांन्तियों के जनक थे। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा था ''वे मौलिक विचारक तथा क्रान्ति दर्शक थे और उनका व्यक्तित्व अनूठा था उन्होंने समाजवादी होते हुए भी किताबी समाजवाद का अनुकरण नहीं किया, उन्होंने क्रान्ति का आह्वान करते हुए भी क्रान्ति को केवल नारा नहीं बनने दिया।'' डॉ0 राम मनोहर लोहिया के विचार 21वीं सदी के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं,।

अध्ययन का उद्देश्य

उनके समग्र विचारों पर रचनात्मक आन्दोलनात्मक एवं बौद्धिक विमर्श की परम आवश्यकता है। अन्यायों के विरूद्ध पूर्ण आन्दोलन चलाने के पक्षपाती विभिन्न सामाजिक–राजनीतिक सुधारों की वकालत की जिसमें जाति व्यवस्था का उन्मूलन, भारत की राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी को मान्यता और नागरिक स्वतंत्रता का मजबूती से संरक्षण शामिल है।उन्हें सरकार की नीतियों की तीखी आलोचना करने के लिये जाना गया। भारतीय राजनीतिज्ञ व कर्मठ कार्यकर्त्ता के रूप में डॉ. लोहिया ने समाजवादी राजनीति और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन भारतीय समाजवाद के विकास के माध्यम से अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिये समर्पित किया। समाजवाद राजनीतिक विचारों के एक समूह को संदर्भित करता है, जो औद्योगिक पूंजीगत अर्थव्यवस्था में मौजूद और इसके द्वारा उत्पन्न असमानताओं की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया। लोहिया ने ऐसी पाँच प्रकार की असमानताओं को चिह्नित किया जिनसे एक साथ लड़ने की आवश्यकता है ।

साहित्यावलोकन

श्री अरविंद जयतिलक 2014 ने अपने पत्र डा.लोहिया और समाजवादी मूल्य में प्रवक्ता डॉट कॉम के अनुसार 'डा. राम मनोहर लोहिया अक्सर कहा

करते थे कि 'सत्ता सदैव जड़ता की ओर बढ़ती है और निरंतर निहित स्वार्थों और भ्रष्टाचारों को पनपाती है।किंतु जहां तक चरित्र का सवाल है, चाहे विदेशी शासन हो या देशी शासन, दोनों की प्रवृत्ति भ्रष्टाचार को विकसित करने में व्यक्त होती है।'

डॉ. पुरूषोत्तम नागर आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन :के अनुसार 'देशी शासन को निरंतर जागरुक और चौकस बनाना है तो प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने राजनीतिक अधिकारों को समझे और जहां कहीं भी उस पर चोट होती हो, या हमले होते हों उसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाए।'

डॉ पी के चतुर्वेदी मार्च, 2019 ने अपने शोध पत्र डॉ. राममनोहर लोहिया के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का अध्ययन में लिखा है कि भारत में समाजवादी विचारधारा को एक आन्दोलन का स्वरूप प्रदान करने तथा उसे प्रभावी रीति से प्रचारित करने वाले चितकों में लोहिया का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। वे एक गांधीवादी चिन्तक राजनीतिक , इतिहासकार , अर्थशास्त्री दार्शनिक तथा विख्यात लेखक थे।

अरविंद जयतिलक 2021 डा. लोहिया के सामाजिक–आर्थिक विचार में कहा है कि राष्ट्र–समाज व्यवस्था में बेहतर बदलाव के लिए डा0 लोहिया ने सामाजिक–आर्थिक संरचना में आमूलचूल परिवर्तन की बात कही थी। उनका स्पष्ट कहना था कि गैर–बराबरी को खत्म किए बिना समतामूलक समाज का निर्माण संभव नहीं है। इसके लिए उन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था को खत्म कर समाजवादी व्यवस्था की स्थापना पर बल दिया। उन्होंने पूंजीवाद की आलोचना करते हुए कहा कि 'पूंजीवाद कम्युनिज्म की तरह ही जुआ, अपव्यय और बुराई है और दो तिहाई विश्व में पूंजीवाद पूंजी का निर्माण नहीं कर सकता। वह केवल खरीद–फरोख्त ही कर सकता है जो हमारी स्थितियों में महज मुनाफाखोरी और कालाबाजारी है।'

अरविंद जयतिलक, 2021 डा. लोहिया के सामाजिक–आर्थिक विचार में कहा है कि लोहिया ने गरीबी और युद्ध को पूंजीवाद की दो संतानें कहा। साम्यवाद पर कटाक्ष करते हुए कहा कि 'साम्यवाद दो–तिहाई दुनिया को रोटी नहीं दे सकता।' उन्होंने आदर्श समाज व राष्ट्र के लिए एक तीसरा रास्ता सुझाया–वह है समाजवाद का।

विषय विस्तार

लोहिया के क्रान्ति का सपना अभी भी अधूरा है। जाति–भेद, रंग –भेद, लिंग–भेद, वर्ग–भेद, भाष–भेद और शस्त्र–भेद रहित समाज का निर्माण करने वाले नेता व दल ढूंढने से भी नहीं मिलते हैं। वे सभी सत्ता के दीवाने हैं परन्तु यदि लोहिया का साहित्य व्यापक पैमाने पर पढ़ा जाये जो शायद आदर्शवादी नौजवानों की नई लहर उठकर सामने आ जाये। लोहिया स्वयं एक सच्चाई है जो कभी पलायन नहीं सिखाती।'

1. नर–नारी की समानता के लिए लोहिया ने जीवन भर आदमी और औरत के भेदभाव का विरोध किया ।
2. गोरे–काले रंग पर रची राज्य की आर्थिक और दिमागी असमानता के खिलाफ राममनोहर लोहिया स्वदेशी के बहुत बड़े पैरोकार थे. उन्होंने अंग्रेजी भाषा का विरोध करते हुए कहा था कि यह शासकों की भाषा है, देश का विकास अपनी भाषा मे ही हो सकता है ।
3. संस्कारगत, जन्मजात जाति प्रथा के खिलाफ और पिछडों को विशेष अवसर के लिए लोहिया ने जातिवाद का कुचक्र तोड़ने के लिए रोटी और बेटी का सिद्धांत दिया था. लोहिया ने कहा था जातिवाद का खात्मा करने के लिए समाज की हर जाति को एक दूसरे बैठ कर खाना चाहिए. इसके साथ ही अंतरजातीय विवाह को बढ़ावा देना चाहिए ।
4. परदेशी, गुलामी के खिलाफ और स्वतंत्रता तथा विश्व लोक–राज के लिए ।
5. निजी पूंजी की विषमताओं के खिलाफ और आर्थिक समानता के लिए व योजना द्वारा पैदावार बढ़न के लिए लोहिया ने हर स्तर पर बराबरी की बात की. शिक्षा के स्तर पर बराबरी लाने का एकमात्र उपाय था कि सरकारी स्कूलों की हालत बेहतर की जाए और सभी सरकारी स्कूलोही अपने बच्चों को पढ़ाएं ।

डॉ0 राम मनोहर लोहिया महज एक राजनीतिक व्यक्तित्व नहीं थे। उनको किसी एक दायरे में बांधना, उनके प्रति नाइन्साफी होगी। वे एक फिजा थे, साथ ही एक अनोखी व गर्म फिज के निर्माता भी। प्रश्न उठता है कि ये फिजा कैसी थी ? सम्पूर्ण आजादी, समता, सम्पन्नता, अन्याय के विरूद्ध जेहाद और समाजवाद की फिजा। आज वह फ़िजा भी नहीं है और लोहिया भी नहीं परन्तु यह सत्य है कि दूसरों के लिए जीने वाला कभी मरता नहीं है। उनका व्यापक सार्वभौतिक चिन्तन और समाजवाद आज भी जीवित है।

डॉ0 लोहिया ने कहा था कि ''लोग सम्भवतः मेरे मरने के बाद मेरी बातों पर ध्यान देंगे लेकिन वे निश्चित ही किसी दिन मुझे सुनेंगे।'' वही पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने डॉ0 लोहिया को महान योद्धा क्रान्तिदर्शी पद दलितों और शोषितों का मसीहा बताया था। डॉ0 लोहिया ने अपने दार्शनिक चिन्तन में जीवन के अनेक या कहा जा सकता है कि सभी पहलुओं को व्यापक दृष्टि दी थी। उन्होंने राजनीति प्रशासन जाति व्यवस्था, भाषा, रंग–भेद, सम्प्रदायवाद, स्त्री–पुरूष विभेद, निशस्त्रीकरण, धर्म संस्कृति, मूर्तिकला और चित्रकला पर भी गम्भीर अध्यनन किया था। वे अपने को अधर्मी भी कहते थे और आस्तिक भी न थे परन्तु फिर भी उन्हें धार्मिक सभाओं में आमंत्रित किया जाता था। वे भारतीय संस्कृति और समाज के तत्वान्वेशी दृष्टा और व्याख्याता भी थे।डॉ0 लोहिया के इतिहास दर्शन में हीगेल की मानव चेतना मार्क्स का पदार्थवादी चिन्तन और मानव संस्कृतियों में चुनौतियों से संघर्ष की क्षमता, सामर्थ्य से सम्बन्धित टॉयनन्वी के विचारों के साथ ही अन्य आधुनिक इतिहासकार व दार्शनिक स्पेंग्लर के अनुसार सामर्थ्ययुक्त समाजों व नगरों द्वारा दुर्बल ग्रामीण समाजों के दोहन की बात थी। सन्निहित रही है।'' डॉ0 लोहिया पूर्णतः गांधी के सत्याग्रह

और अहिंसा के अखण्ड समर्थक थे, उन्होंने अपने जीवन में गांधी की अवधारणा को अपनाया जरूर लेकिन वे गांधीवाद को अधूरा दर्शन मानते थे। वे समाजवादी थे लेकिन मार्क्स को एकांगी मानते थे उनके अनुसार मार्क्स ने समाजवाद को आर्थिक निर्धारणवाद से जोड़कर परिवर्तन का स्वरूप बनाया था परन्तु ये विचारधारा विकासशील राष्ट्रों में कोई खास प्रभाव न छोड़ सकी।

डॉ0लोहिया मानते थे कि पूंजीवाद एवं साम्यवाद एक दूसरे के विरोधी होकर भी दोनों एकांगी और हेय हैं इन दोनों से समाजवाद ही छुटकारा दे सकता है, और समाजवाद प्रजातंत्र के बिना अधूरा है। उनकी दृष्टि में प्रजातन्त्र एवं समाजवाद एक सिक्के के दो पहलू हैं और इसलिए वे एक दूसरे के बिना अधूरे व बेमतलब हैं। लोहिया ने मार्क्स वाद और गांधीवाद को मूल रूप में समझा और दोनों को अधूरा पाया, क्योंकि इतिहास की गति ने दोनों को छोड़दिया है। लोहिया की दृष्टि में मार्क्स पश्चिम के तथा गांधी पूर्व के प्रतीक हैं ओर वे पश्चिम व पूर्व की खाई को पाटना चाहते थे। यह भी सत्य है कि ''भारत में समाजवाद को संघर्ष का कार्यक्रम बनाने तथा उसकी विचारधारा को विशुद्ध गांधीवादी सिद्धान्तों के अनुसार सविनय अवज्ञा के रूप में कार्यान्वित करने का कार्य भी लोहिया ने किया था।''[3]

डॉ0 लोहिया के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता थी कि जो वे सोचते थे वही करते थे और वही बोलते थे। कर्म चिन्तन और वाणी की यह परिपूर्ण एकता लोहिया को दूसरे राजनीतिज्ञों से अलग करती थी।''[4] डॉ0 लोहिया कट्टर अहिंसात्मक आन्दोलनों तथा सिद्धान्तों के समर्थक रहे–सत्याग्रही के रूप में ''मारेंगे नहीं पर मानेगे नहीं ने स्वतन्त्रोत्तर भारत में अपना प्रतिमान बनाया। उनकी दृष्टि मे गांधी का सम्पूर्ण आन्दोलन एक नैतिक आन्दोलन था, अन्याय को सहना वे अनैतिक मानते थे और इसी प्रकार अन्याय का विरोध न करना वे अनैतिक मानते थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भी अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करना और उसके लिए कठिन से कठिन यातना भोगना उनके लिए खेल था।[5] डॉ0 लोहिया के अनुसार यदि समाजवाद की परिभाषा देनी हो तो वे हैं – ''समता और सम्पन्नता'' इन दो शब्दों में समाजवाद का पूरा मतलब निहित है, देश काल के अनुसार सम्भव मतलब और आदर्श के अनुसार सम्पूर्ण मतलब। वे अपनी नीतियों द्वारा समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें शोषण, अमीर–गरीब के बीच भेद–भाव, और ऊंच–नीच का अंतर न हो जिससे विश्व मानवता को बल मिल सके। डॉ0 लोहिया आर्थिक विकेन्द्रीकरण के जनक थे।

डॉ0लोहिया के अनुसार आज के भयंकर उत्पादन से यह स्पष्ट हो गया है कि भारत के आर्थिक विकास के लिए विकेन्द्रीकरण एक मात्र रास्ता है। विकेन्द्रीकरण के पक्ष में डॉ0 लोहिया के विचार थे– ''मनुष्य पागलपन के कार्य करने लगेगा और यदि उसकी सफलता की भूख शान्त न हुई इसलिए उद्योगों का राष्ट्रीयकरण तथा अर्थव्यवस्था का नियोजन होकर सामाजिक स्वामित्व व नियंत्रण का सभ्य मात्र में विकेन्द्रीकरण होना चाहिए।''[6] वह पूर्णतः एक समता आधारित समाज की संरचना की कल्पना करते हैं और पूरे समाज व अर्थव्यवस्था का आमूल बदलाव उनकी कामना है। इसीलिए उन्होंने प्रशासन में चौखम्भा राज (गांव, जिला, प्रदेश और मध्यवर्ती केन्द्र) और अर्थव्यवस्था का विकेन्द्रीयकरण उनके चौखम्भा राजव्यवस्था छोटी इकाइयों द्वारा उत्पादन कार्य करने की विधि थी और यह सामाजवादी आर्थिक नियोजन के कार्य को सम्पन्न कराने का तरीका था। यह व्यवस्था गांव को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने का समझदार तरीका था, तथा उनका यह मानना था कि आर्थिक योजना बनाने की कुछ शक्तियां जिले को मिलेगी और कुछ सुविधा ग्राम पंचायतों को मिलेंगी जिससे वे स्वयं अपना जीवन मार्ग तय कर सकेंगे। उनका विवचार था कि राज्य की सम्पूर्ण आय का 1/3 से 1/4 भाग तक अधिकृत रूप से गांव तथा जिले को मिलना चाहिएं इन आर्थिक क्रियाओं का बंटवारा करके सामान्य व्यक्ति को समानता की अनुभूति कराने का सार्थक प्रयत्न होगा।

डॉ0 लोहिया इन आर्थिक विषमता की समाप्ति के विषय में काफी आशावान थे और उन्होंने लिखा भी है कि –''अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय गैर बराबरी और गरीबी के खिलाफ लड़ाई अब कुछ ज्यादा सचेत होती जा रही है।''[7] डॉ0 लोहिया का विचार था कि भारत एक निर्धन देश है और यदि इसकी आर्थिक विषमताएं दूर नहीं की जायेगी तो लोगों में मानसिक उदासीनता बनी रहेगी इसलिए बेकारी भत्ता, आयोग्यता की पेंन्शन, निम्न आय की गारण्टी तथा सभी को रोजगार प्रदान करने की योजना पर विचार अत्यन्त आवश्यक है।

डॉ0 लोहिया ने महात्मा गांधी के भाषायी विचारों को भी पूर्ण आत्मसात किया था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधी ने जनशक्ति की एक जुटता के लिए हिन्दी एवं अन्य भारतीय जन भाषाओं को माध्यम के रूप में अपनाया था जो हमारी राष्ट्र एकता एवं सांस्कृतिक जागरण की आधार बनी थी। हिन्दी के व्यापक आधार के कारण ही यह स्वतः स्वीकृत राष्ट्र भाषा बन गयी जिसने राष्ट्र की सामाजिक सांस्कृतिक चेतना को परस्पर प्रगाढ़ता से बांधे रखां डॉ0 लोहिया ने गांधी के इस प्रयोग और हथियार को देखा और अनुभव किया था कि हिन्दी ही वह भाषा है जो जनमानस को जोड़ने और जाग्रत करने में समर्थ है क्योंकि यही वृहत्तर आधार वाली जन भाषा है।

डॉ0 राम मनोहर लोहिया के विदेश नीति के विचार स्पष्ट थे, वे सक्रिय मध्यस्थता की बातें करते थे जो कि नेहरू के गुट निरपेक्षता के सिद्धान्त से भिन्न थीं क्योंकि सदैव विश्व के दो ब्लाकों के मध्य शीतयुद्ध के बारे में ही चिन्तित रहते थे परन्तु लोहिया एक तीसरे गुट की समस्याओं के बारे में चिन्तित थे। जो कि उन राष्ट्रों का था जहां सामाजिक आर्थिक–विभिन्नता, पराधीनता, गरीबी अन्याय और सुदृढ़ सरकारों का गठन नहीं था, और तीसरा खेमा प्रमुखता से एशिया थां वे यहां के लोगों को संकीर्णता की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए एक ऐसे समाजवादी आन्दोलन को चलाना चाहते थे, जिससे सभी को समता, सम्पन्नता और स्वतंत्रता प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष

क्रान्तियों के सम्बन्ध में लोहिया ने कहा कि – ''मोटे तौर से क्रान्तियां हैं और विश्व में एक साथ चल रही हैं। अपने देश में भी उनको चलाने की कोशिश करनी चाहिए। जितने लोगों को भी क्रान्ति पकड में आयी हो उसके पीछे पड़ जाना चाहिए। शायद ऐसा संयोग हो जाये कि आज का इंसान नाइन्साफियों के खिलाफ लड़ता जूझता ऐसे समाज व ऐसी दुनिया को बना पाये कि जिमें आन्तरिक शान्ति और बाहरी या भौतिक भरा पूरा समाज बन पाये।'' लोहिया की चिन्तन धारा कभ देशकाल की सीमा की बन्दी नहीं रहीं विश्व की रचना और विकास के बारे में उनकी अनोखी व अद्वितीय दृष्टि थी, इसलिए उन्होंने सदा ही विश्व नागरिकता का सपना देखा था, वे मानव मात्र को किसी देश का नहीं बल्कि विश्व का नागरिक मानते थे। वे एक ऐसी दुनिया की कल्पना करते थे जिसमें एक देश से दूसरे देश में बिना परमिट के जाया जा सके, और वे एक ऐसी विश्व पंचायत की कल्पना करते थे जो सारी राष्ट्री सीमाओं के ऊपर प्रतिष्ठत हो और सारी दुनिया को एक सूत्र में बराबरी के भाईचारे में बांधती हो। यही बात उनके विश्व बंधुत्व की धारणा को स्थापित करती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *समाजवादी दर्शन–डॉ0 राम मनोहर लोहिया–लक्ष्मी कान्त वर्मा, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग 1999, पृ0–38*
2. *लोहिया के विचार–शरद् ओमकार, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0–127*
3. *समाजवादी चिन्तन का इतिहास–प्रताप बृजेन्द्र, पृ0–444*
4. *राम मनोहर लोहिया आचरण की भाषा–राय राम कमल, लोक भारती प्रकाशन, पृ0–128*
5. *सोशलिस्ट पार्टी भाग–2 शंकर गिरिजा, पृ0–284*
6. *मार्क्स गांधी और समाजवाद –लोहिया राम मनोहर, पृ0–286*
7. *सप्तक्रान्तियां –लोहिया राम मनोहर, पृ0– 286 व्हील ऑफ हिस्ट्री : राम मनोहर लोहिया।*
8. *मार्क्स , गांधी एण्ड सोशलिज्म : राम मनोहर लोहिया।*
9. *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन : डॉ . वी . पी वर्मा।*
10. *आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन : डॉ . पुरूषोत्तम नागर*
11. *P. K. Chaturvedi*, in* Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education